

## 60 Years of establishment of Diplomatic Relations between India and Maldives

From the first recorded settlers- Giraavaaru people from South India to the footprints left by the Chola empire, during their broader naval campaigns in the 10<sup>th</sup> century in the Maldives, the roots of the India-Maldives relations run deep in shared soil. India and Maldives share a common heritage of ancient Hindu ritualistic tradition of *Srauta*, venerating the sun god, and spiritual Buddhist traditions, with Buddhist stupas & viharas excavated across islands like Male, Fuvahmulah, Gan, and Thoddoo. The common heritage in Hinduism, Buddhism, and later Islam, bound both nations together in the timeless values of harmony, empathy, peaceful co-existence and reciprocal respect.

India and Maldives share a long and multifaceted relationship, marked by ethnic, linguistic, cultural, religious, and commercial ties that stretch back centuries. After Maldives gained independence from British protectorate status on 26 July, 1965, India was among the first to recognize Maldives as an independent and sovereign nation. In the same year, on November 01, formal diplomatic relations were officially established between India and Maldives.

India was the first country to establish its resident High Commission in Maldives in 1978. Between 1965-1978, the Maldives was accredited to the High Commission of India, Colombo in Sri Lanka. Maldives opened its first Resident High Commission at New Delhi in 2004 before which diplomatic representation was managed from the Maldivian High Commission in Colombo and its Permanent Mission in New York (for conducting broader international diplomacy).

India's role as a 'First Responder' in crises have been firmly established with the launch of Operation Cactus'- a swift military intervention in response to an attempted coup against President Gayoom, in 1988, followed by the launch of 'Operation Castor' providing significant relief and assistance to the Maldives amid devastating Indian Ocean Tsunami of December 2004, and 'Operation Neer' in 2014 during water crisis in Male. Later, during Covid times, pandemic solidarity through Operation Sanjeevni and Vaccine Maitri further reinforced India's role as the first responder for Maldives during any crisis.

India formally adopted the 'Neighborhood First' policy in May 2014, with Maldives occupying a place of prominence due to its geographical proximity and strategic relevance. The relationship was further upgraded with SAGAR (Security and Growth for All in the Region) and expanded into a broader MAHASAGAR vision in post-2020, with India firmly establishing its credentials of a "first responder" in times of crisis.

India is among the top trading partners of Maldives, and bilateral trade has grown steadily, with new shipping and air connectivity links facilitating business and commerce. Indian tourists contribute significantly to the Maldivian tourism sector, while Indian enterprises and professionals are actively involved in the country's key sectors.

At the heart of this vibrant partnership lies a deep cultural and people-to-people connection. The proximity of the two countries has enabled centuries of exchange of language, art, craftsmanship, culinary traditions, and shared experiences that continue to shape the collective identities of both peoples.

**Maritime Heritage: The Uru and the Vadhu Dhoni:** This Commemorative Postage Stamp, featuring the Indian boat Uru and the Maldivian boat Vadhu Dhoni, is a tribute to the age-old maritime traditions that have long connected India and the Maldives. These traditional boats reflect the shared oceanic legacy and enduring craftsmanship of both nations.

**The Uru - India's Mastercraft from Beypore:** The Uru, also known as the "Fat Boat," is a large wooden dhow handcrafted in the historic boatyards of Beypore, Kerala. These boats have been part of the Indian Ocean trade for centuries, traditionally used by Arab merchants for transporting goods. Made primarily of teak wood, Urus are renowned for their durability, elegance, and impressive scale. Even today, Uru-building is an artisanal tradition preserved by skilled craftsmen, passed down through generations without blueprints or manuals. The Uru is a proud symbol of India's maritime heritage and the long-standing commercial exchanges between the Indian subcontinent and island nations such as the Maldives.

**The Vadhu Dhoni - Pride of the Maldivian Seas:** A traditional Maldivian fishing boat, the Vadhu Dhoni is locally crafted for reef and coastal fishing. Built with a narrow wooden hull, it allows smooth navigation through lagoons and seas. Most are powered by inboard motors today, though some still retain their traditional sailing capabilities. Often used for handline fishing, it symbolizes the Maldives' rich maritime heritage and the close bond between island life and the ocean.

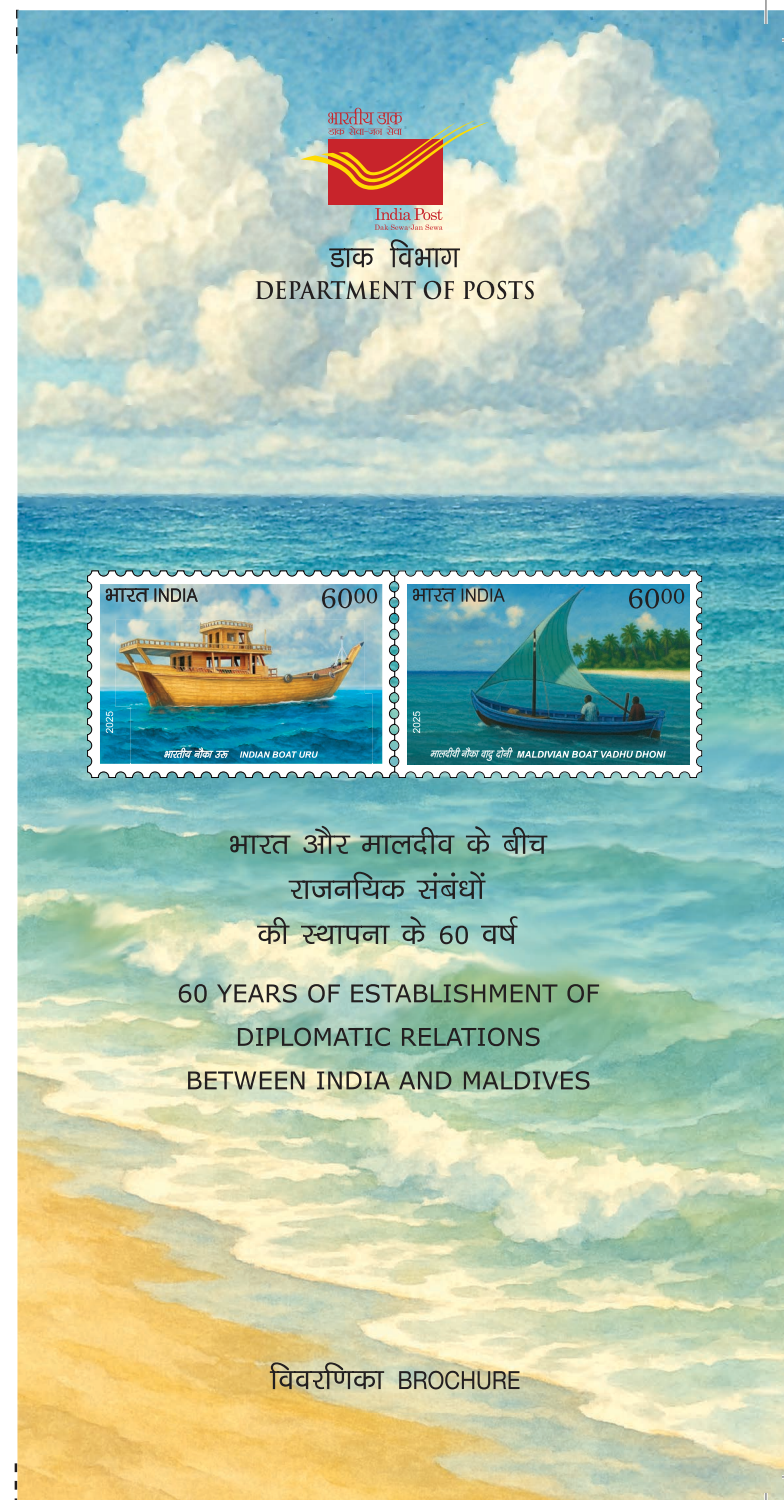
The Department of Posts proudly releases the Commemorative Postage Stamp that embodies the essence of the India-Maldives partnership anchored in history, enriched by culture, and propelled by cooperation. This stamp highlights the timeless maritime connection and the journey of mutual progress undertaken by both nations.

### Credits:

Stamp/Souvenir Sheet/ FDC/Brochure/ : Shri Sankha Samanta  
Cancellation Cachet

Text

: Referenced from content  
provided by Ministry of  
External Affairs



## भारत और मालदीव के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना के 60 वर्ष

भारत-मालदीव संबंध अत्यंत प्राचीन हैं। इन संबंधों की जड़ें, इतिहास में मालदीव के प्राचीनतम निवासियों के रूप में दर्ज 'गिरावारु' जाति के लोगों से लेकर चोल साम्राज्य द्वारा 10वीं शताब्दी में अपने व्यापक नौसैनिक अभियानों के दौरान वहाँ अंकित पदचिह्नों तक में व्याप्त हैं। भारत और मालदीव सूर्य देवता की आराधना से जुड़ी हुई प्राचीन हिंदू अनुष्ठान परंपरा 'श्रौत' और आध्यात्मिक बौद्ध परंपराओं की चिरंतन विरासत साझा करते हैं। माले, फुवाहमुला , गण और थोडू जैसे द्वीपों में उत्खनन में मिले बौद्ध स्तूप और विहार इस परम्परा के जीवंत साक्ष्य हैं। हिंदू, बौद्ध और बाद के वर्षों में इस्लाम से जुड़ी इस साझी विरासत ने दोनों देशों को सद्भाव, सहानुभूति, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और पारस्परिक सम्मान के शाश्वत मूल्यों से आबद्ध किया है।

भारत और मालदीव के बीच सदियों पुराने नृजातीय, भाषाई, सांस्कृतिक, धार्मिक और व्यावसायिक संबंध हैं। ये संबंध अत्यंत दीर्घकालिक और बहुआयामी हैं। 26 जुलाई, 1965 को मालदीव को ब्रिटेन से आजादी मिलने के बाद, भारत मालदीव को स्वतंत्र और संप्रभु राष्ट्र के रूप में मान्यता देने वाले सबसे पहले देशों में से एक था। उसी वर्ष, 1 नवंबर को, भारत और मालदीव के बीच आधिकारिक रूप से औपचारिक राजनयिक संबंधों की शुरुआत हुई।

भारत, सन् 1978 में मालदीव में अपना आवासीय उच्चायोग स्थापित करने वाला पहला देश था। इससे पूर्व, 1965 से 1978 तक की अवधि तक मालदीव के साथ भारत के राजनयिक संबंध श्रीलंका के कोलंबो स्थित उच्चायोग से संचालित होते थे। मालदीव ने अपना पहला आवासीय उच्चायोग वर्ष 2004 में नई दिल्ली में खोला। इससे पूर्व, मालदीव का राजनयिक प्रतिनिधित्व कोलंबो स्थित मालदीव उच्चायोग और न्यूयॉर्क स्थित उसके स्थायी मिशन (व्यापक अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति के संचालन हेतु) द्वारा किया जाता था।

भारत संकट के समय में मालदीव के लिए 'प्रथम सहायता प्रदानकर्ता' के रूप में सदैव उपस्थित रहा है। इसकी शुरुआत वर्ष 1988 में राष्ट्रपति गयूम के विरुद्ध तख्तापलट की कोशिश को विफल करने हेतु 'ऑपरेशन कैक्टस' के तहत की गई त्वरित सैन्य कार्रवाई से हुई। दिसंबर, 2004 में हिंद महासागर में आई विनाशकारी सुनामी के दौरान 'ऑपरेशन कैस्टर' के अंतर्गत भारत ने मालदीव को बड़ी मात्रा में राहत सामग्री और सहायता पहुंचाई। वर्ष 2014 में, 'ऑपरेशन नीर' के तहत भारत ने माले को गंभीर जल संकट से उभारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तत्पश्चात, कोविड के दौरान, भारत ने 'ऑपरेशन संजीवनी' और 'वैक्सीन मैत्री' जैसे अभियानों के माध्यम से इस भयंकर महामारी के समय एकजुटता प्रदर्शित करते हुए, किसी भी संकट के दौरान मालदीव के लिए 'प्रथम सहायता प्रदानकर्ता' के रूप में अपनी भूमिका को और अधिक सुदृढ़ किया।

मई, 2014 में, भारत ने 'पड़ोस प्रथम' नीति की औपचारिक घोषणा की। इससे मालदीव को भारत के साथ अपनी भौगोलिक निकटता और रणनीतिक प्रासंगिकता के कारण और भी महत्वपूर्ण दर्जा प्राप्त हुआ। 'सागर' (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से भारत-मालदीव के बीच राजनयिक संबंधों में विशेष प्रगति हासिल हुई। वर्ष 2020 के बाद, 'महासागर' विजन के तहत इन संबंधों को और अधिक व्यापक स्वरूप प्रदान किया गया तथा संकट के समय "प्रथम सहायता प्रदानकर्ता" के रूप में भारत की साख और भी मजबूत हुई है।

भारत, मालदीव के शीर्ष व्यापारिक साझेदारों में से एक है, और हमारे द्विपक्षीय व्यापार में लगातार वृद्धि हो रही है; समुद्री और हवाई मार्ग से कनेक्टिविटी के नए-नए मार्ग उपलब्ध होने के कारण व्यापार और वाणिज्य आसान हुआ है। एक ओर जहां मालदीव के पर्यटन क्षेत्र के विकास में भारतीय पर्यटकों का महत्वपूर्ण योगदान है; वहीं भारतीय उद्यम और पेशेवर भी मालदीव के महत्वपूर्ण सेक्टर में सक्रिय रूप से अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

भारत और मालदीव के बीच इस जीवंत साझेदारी के मूल में इन दोनों देशों के गहरे सांस्कृतिक संबंध और यहाँ के लोगों का परस्पर जुड़ाव निहित है। भौगोलिक निकटता के कारण दोनों देशों के बीच सदियों से भाषा, कला, शिल्प कौशल, भोजन परम्परा और साझा अनुभवों का आदान-प्रदान होता रहा है और यही आदान-प्रदान दोनों देशों के लोगों की सामूहिक पहचान को आकार देता रहा है।

**समुद्री विरासत:** उरु और वादु दोनी : भारत और मालदीव सदियों पुरानी समुद्री परंपराएँ साझा करते हैं। इस चिरंतन परम्परा के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए इस स्मारक डाक टिकट पर भारतीय नौका 'उरु' और मालदीव की नौका 'वादु दोनी' का अंकन किया गया है। ये पारंपरिक नौकाएँ दोनों देशों की साझा महासागरीय विरासत और चिरस्थायी शिल्प कौशल की प्रतीक भी हैं।

**उरु – भारत के बेपुर नगर की उत्कृष्ट शिल्पकला :** उरु को "फैंट बोट" के नाम से भी जाना जाता है। एक बड़ी लकड़ी से बनी यह दाऊ, केरल के बेपुर नगर के ऐतिहासिक बोटयार्ड की शिल्पकला का अद्भुत नमूना है। ये नौकाएँ सदियों से हिंद महासागर के माध्यम से होने वाले व्यापार का हिस्सा रही हैं। इन्हें पारंपरिक रूप से अरब व्यापारियों द्वारा माल परिवहन के लिए उपयोग किया जाता था। मुख्य रूप से टीक की लकड़ी से बनाए जाने वाली उरु नौका अपने टिकाऊपन, भव्यता और शानदार क्षमता के लिए प्रसिद्ध हैं। उरु नौका की निर्माण कला, पिढ़ियों से बिना किसी ब्लूप्रिंट या मैनुअल के चली आ रही है। यह परंपरा आज भी वहाँ के कुशल कारीगरों के हाथों संरक्षित है। उरु भारत की समुद्री विरासत और भारतीय उपमहाद्वीप तथा मालदीव जैसे द्वीपीय देशों के बीच दीर्घकालिक वाणिज्यिक आदान-प्रदान का गौरवशाली प्रतीक है।

**वादु दोनी – मालदीव के समुद्रों का गौरव :** 'वादु दोनी' मालदीव में स्थानीय स्तर पर तैयार की जाने वाली पारम्परिक नौका है। इसका निर्माण छोटी समुद्री यात्राओं और मछली पकड़ने के लिए किया जाता है। इसे बनाने के लिए कम चौड़ाई वाली लकड़ी का इस्तेमाल किया जाता है। यह झीलों और समुद्र में आसान आवाजाही के लिए सुविधाजनक होती है। यद्यपि, ये नौकाएँ अब अधिकतर मोटर की सहायता से संचालित हो रही हैं; तथापि इनमें से कुछ के में आज भी नौकायन के पारम्परिक तौर-तरीकों का इस्तेमाल किया जा रहा है। प्रायः मछली पकड़ने के लिए उपयोग की जाने वाली 'वादु दोनी' मालदीव की समृद्ध समुद्री विरासत, और द्वीपीय जन-जीवन तथा महासागर के बीच उसके गहन संबंधों का प्रतीक है।

डाक विभाग, भारत-मालदीव के प्रगाढ़ संबंधों पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए गौरव का अनुभव करता रहा है। इन संबंधों की जड़ें इतिहास में निहित है, साझी संस्कृति इन्हें पोषित करती है और परस्पर सहयोग इन्हें नित नई ऊँचाइयों प्रदान कर रहा है। यह डाक-टिकट दोनों देशों के शाश्वत समुद्री संबंधों और उनकी पारस्परिक प्रगति की यात्रा का प्रतीक है।

### आभार :

डाक टिकट/सुवेनियर शीट/प्रथम दिवस आवरण/ : श्री शंख सामंत

विवरणिका/ / विरूपण कैशे

पाठ

: विदेश मंत्रालय द्वारा प्रदत्त सामग्री से संदर्भित

## तकनीकी आंकड़े

### TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग : 6000 पैसे, 6000 पैसे  
Denomination : 6000p, 6000p

सोवीनियर शीट मूल्य : 12000 पैसा  
Souvenir Sheet Price : 12000 p

मुद्रित सोवीनियर शीट : 1,11,200  
Souvenir Sheets Printed : 1,11,200

मुद्रण प्रक्रिया : वेट ऑफसेट  
Printing Process : Wet Offset

मुद्रक : प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद  
Printer : Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at [http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY\\_3D.html](http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html)

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00